माननीय प्रधानमंत्री ने अध्यक्षीय शोध कदम का उद्घाटन किया

नई दिल्ली, 23 जुलाई, 2015: भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज संसदीय सौध में संसद सदस्यों के लिए अध्यक्षीय शोध कदम का उद्घाटन किया। माननीय लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन की पहल पर आयोजित इस समारोह में लोक सभा के उपाध्यक्ष डा. एम. तम्बिदुरै; अनेक माननीय मंत्री; संसद सदस्य; पूर्व संसद सदस्य और अन्य विशिष्टजन उपस्थित थे।

माननीय प्रधानमन्त्री ने इस अवसर पर कहा कि अब पहले जैसा वक्त नहीं रहा कि जब सांसद को किसी विषय पर बोलना हो तो ढेर सारी चीजें ढूंढ़नी पड़ें , इकट्ठी करनी पड़ें , ये सारी चीजें नहीं रही हैं।टेक्नोलॉजी ने इतना बड़ा रोल प्ले किया है और अगर आप भी गूगल के विद्यार्थी हो जाएँ तो मिनटों के अंदर आपको जिन विषयों पर जानकारी चाहिए, वह जानकारी आपको मिल जाती है। लेकिन जब जानकारियों की भरमार हो, तब कठिनाई पैदा होती है कि इनमें से कौन सी चुने? किसे उठाएं ? हर चीज उपयोगी लगती है लेकिन कब करें, कैसे करें, प्रायोरिटी किसे दें और इसलिए सिर्फ जानकारियों के द्वारा हम संसद में गरिमामय योगदान दे पाएंगे, इसकी गारंटी नहीं है जब तक कि हमें उसके पूरे रेफ्रेंस मालूम न हों।

श्री मोदी ने आगे कहा कि कोई विषय अचानक नहीं आते हैं, लम्बे अरसे से ये विषय चलते रहते हैं। उन विषयों पर राष्ट्र की अपनी एक सोच बन जाती है। दलों की अपनी सोच बनती है और यह परम्पराओं का एक बहुत बड़ा इतिहास होता है। इन सबमें से तब जाकर हम अमृत पा सकते हैं जबकि इसी विषय के लिए डेडिकेटेड लोगों के साथ बैठें, विचार-विमर्श करें और तब जाकर विचार की धार निकलती है। अब जब तक विचार की धार नहीं निकलती है, तब तक हम प्रभावी योगदान नहीं दे पाते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि यह बहुत आवश्यक हो गया है कि हम एक बहुत बड़े दायरे में भी अपने क्षेत्र की जो आवश्यकता है, दोनों को जोड़कर संसद को एक महत्वपूर्ण माध्यम बनाकर अपनी चीज़ों को कैसे कार्यान्वित करवा पाएं। हम जो क़ानून बनायें, जो नियम बनायें, जो दिशा तय करवाएं, उसमें ये दो मार्जिन की आवश्यकता रहती है और तब कितना कठिन काम होता जा रहा है, संसद के अंदर संसद की बात का कितना महत्व बढ़ता जा रहा है, इसका अंदाजा होना चाहिए। उन्होंने सांसदों से आग्रह किया कि वे स्पीकर्स रिसर्च इनिशिएटिव में जब हिस्सा लें तो खुले मन से सारे विकार भूल जाएँ और सोचें कि मैं इस विषय को जीरो से शुरू करता हूँ, तब आप देखना कि हम चीज़ों को नए सिरे से देखना शुरू करेंगे।

इससे पहले अपने स्वागत भाषण में लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि लोक सभा अध्यक्ष के रूप में उनके पिछले एक साल के कार्यकाल के दौरान कई बार उनकी सांसदों से विस्तारपूर्वक बातचीत हुई। इन मुलाकातों के दौरान विभिन्न मुद्दों के बारे में अधिक जानकारी और इन्हें गहनता से समझने के लिए विविध प्रकार के महत्वपूर्ण मामलों के बारे में उच्च गुणवत्ता वाली शोध सामग्री की मांग की गई। इसी संदर्भ में शोध कदम की परिकल्पना तथा हुई और कार्यान्वित की गई। एक कोर ग्रुप सदस्यों के लिए तथा किए जाने वाले संक्षिप्त विवरणों के लिए संतुलित जानकारी प्रदान करेगा।

इस बात का उल्लेख करते हुए कि पूरे विश्व में संसद की भूमिका लगातार जटिल होती जा रही ह, उन्होंने कहा कि शोध सहायता अब और भी आवश्यक हो गई ह क्योंकि नए सदस्यों की संख्या अनुभवी सदस्यों से अधिक ह इसलिए, राष्ट्रीय हित और महत्व के सभी मामलों पर सुविचारित राय बनाने के लिए सामयिक रूचि के विषयों के विभिन्न पहलुओं पर विषय विशे-षज्ञों से लगातार जानकारी की आवश्यकता ह

श्रीमती महाजन ने कहा कि एसआरआई के तीन पहलू होंगे अर्थात् (क) माननीय सदस्यों के अनुरोध पर विशिट मुद्दों के बारे में विशेषज्ञों द्वारा तथ्यात्मक विवरण की प्रस्तुति (ख) अध्यक्षीय प्रशिक्षु कार्यक्रम और (ग) अध्यक्षीय अध्येतावृत्ति कार्यक्रम।

सर्वप्रथम, अध्यक्षीय शोध कदम के अंतर्गत सतत् विकास लक्ष्यों पर पहली कार्यशाला आयोजित की गई।